महिलाओं की मदद में विदेशी बाला

DINAR UJALA Dt 2.12.06

सीतामढ़ी। जिले के पर्यटक स्थल सीतामढ़ी की ग्रामीण महिलाओं के उत्थान एवं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए पश्चिम जर्मनी की एक 25 वर्षीय बाला जूलिया ग्रामीण महिलाओं से मिलकर उनकी समस्याओं से रुबरू हो रही है और उन्हें आत्म निर्भर बनाने के लिए जरूरी टिप्स दे रही है। यह विदेशी युवती जहां लोगों में आकर्षक का केंद्र बनी हुई है, वहीं जरूरतमंद गरीब महिलाओं में इसकी योजनाएं नई आस जगा रही है।

इंटरनेशनल को-आपरेशन आफ डेवलपमेंट जर्मनी से मास्टर डिग्री हासिल करने के बाद धनाढ्य परिवार की इस लड़की में गरीबों की मदद की भावना कूट-कूट कर भरी है। नई दिल्ली के द्रौपदी ट्रस्ट से जुड़ी इस बाला ने सीता समाहित स्थल ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी पं. सत्यनारायण प्रकाश पुंज के सहयोग से सीतामढ़ी क्षेत्र के गांवों की महिलाओं के उत्थान का बीड़ा उठाया है।

उसका कहना है कि वह यहां की

ग्रामीण महिलाओं में जगी रोजगार की आस

कंप्यूटर से लेकर हथकरघा तक की दी जाएगी ट्रेनिंग

महिलाओं को कंप्यूटर ट्रेनिंग, टेलरिंग, कढ़ाई, जड़ाई, अचार, नर्सरी, आयुर्वेद और हथकरघा आदि की उच्चस्तरीय ट्रेनिंग देकर उन्हें ऐसे कामों में निपुण बनाना चाहती हैं, जिससे ये महिलाएं अपने पैरों पर खड़ी हो सकें। इसमें उनकी संस्था द्रौपदी ट्रस्ट से भी पूरा सहयोग मिलेगा। अमर उजाला से बातचीत में जूलीया कहा कि हिंदुस्तान व्यवसाय की दृष्टि से वृम मार्केट है। हिंदुस्तान के गांवों और जर्मनी के गांवों में कितना अंतर है इस प्रश्न के उ कि जर्मनी के शहरों एवं गांव खास अंतर नहीं है। वह खु जर्मनी के एक गांव में रहती सुविधाएं शहरों में हैं वही सारी गांवों में भी है, लेकिन हिंदुस्तान में रहना बहुत ही कठिन है। यहा अभी पचास वर्ष पीछे है। या अधिकांश महिलाएं काम नहीं इससे उनके पास इनकम नहीं है। सबको काम करना चाहिए। हम चा कि ग्रामीण महिलाएं प्रशिक्षित हों काम करें। सीतामढ़ी को पर्यटन के रूप में विकसित कर यहां रोजगार क अवसर की असीम संभावना है। उसके इस कार्य में दयावंती पुंज माडल स्कूल सीतामढ़ी की प्रिंसिपल डा. राजकुमारी एवं स्कूल के अन्य अध्यापक भी सहयोग कर रहे हैं।

सीतामढ़ी। जिले के पर्यटक स्थल सीतामढ़ी की ग्रामीण महिलाओं के उत्थान एवं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए पश्चिम जर्मनी की एक 25 वर्षीय बाला जूलिया ग्रामीण महिलाओं से मिलकर उनकी समस्याओं से रुबरू हो रही है और उन्हें आत्म निर्भर बनाने के